श्रीविष्णुसहस्रनाम से श्लोक

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ। मैं उन भगवान विष्णु की वन्दना करता हूँ जो भवभय को हरने वाले हैं व
समस्त लोकों के एकमात्र स्वामी हैं,
जो शान्ति के मूर्तरूप हैं, शेषनाग पर शयन करते हैं,
जिनकी नाभि कमल से युक्त है, जो देवताओं के अधिपति हैं,
जो विश्व के आधार हैं, गगन सदृश हैं,
जिनका वर्ण मेघ के समान है, जिनका रूप अतीव मनोहर है,
जो देवी लक्ष्मी के परमप्रिय हैं, जिनके नयन कमल के समान हैं और
जिनके दर्शन योगियों को ध्यान में होते हैं।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।